शोध सारांश

किसी भी शोधकार्य की सफलता एवं उत्कृष्टता उसके निष्कर्ष पर निर्भर करती है। प्रस्तुत अध्याय का उद्देश्य अध्ययन का पुनरावलोकन करते हुए प्राप्त निष्कर्षों की व्याख्या एवं उनके शैक्षिक निहितार्थ का विवेचन तथा भावी शोध हेतु सुझाव प्रस्तुत करना है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने 'श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया है। इस परिच्छेद में सम्पूर्ण शोध कार्य सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव प्रस्तुत किये गए जिनका विस्तृत विवेचन आगे दिया गया है।

समस्या का औचित्य :–

वर्तमान समय में शिक्षा केवल आजीविका का एक साधन मात्र बनकर रह गयी है। इससे बालक में जिन मूल्यों का प्रतिपादन होना चाहिए वह नहीं हो पा रहा है। शिक्षा के द्वारा बालक अपने स्व को नहीं पहचान पा रहा है। शिक्षा का कार्य केवल बालकों को पुस्तकीय ज्ञान प्रदान करना रह गया है।

जिससे छात्रों में नैतिक चारित्रिक गुणों का अभाव सा हो गया है, विद्यालयों में अनुशासनहीनता का वातावरण व्याप्त है और छात्रों के मन और मस्तिष्क में आध्यात्मिकता के मारे स्थान पर विलासिता और अहं का भाव प्रबल हो गया है। इस प्रकार वर्तमान शिक्षा विशाभ्रमित सी प्रतीत होती है। गुरु एवं शिष्य के सम्बन्ध औपचारिकतापूर्ण होते जा रहे हैं। अध्यापक स्वयं अपने पद का प्राचीन गौरव पुनस्थापित नहीं कर पा रहे हैं। व्यक्ति के व्यक्तित्व में श्रेष्ठ गुणों का निरंतर अभाव होता जा रहा है जिससे समाज में प्रेम व सौहार्दपूर्ण वातावरण होता नजर आ रहा है। मानव कर्मवादी विचारधारा को छोड़ फलवादी विचारधारा को अपना रहा है।

शोधकर्त्ता ने वर्तमान परिदृश्य में फलवादी विचारधारा, गुरू एवं शिष्य के बीच बढ़ती दूरी, छात्रों में गुरु के प्रति श्रद्धा का अभाव और मानव मात्र में सद्गुणों का अभाव प्रत्यक्ष अनुभव किया। उसे प्रतीत हुआ कि मानव के कल्याण के लिये गीता के आध्यात्मिक व शैक्षिक मूल्यों का उजागार होना अपरिहार्य है।

भारतीय धर्म, दर्शन एवं संस्कृति की भाषा के रूप में बौद्धिक, भावात्मक आध्यात्मिक तथा कलात्मक ज्ञान की धारा को प्रवाहित करने में हमारे प्राचीन साहित्य रत्न श्रीमद्भगवद्गीता का महत्त्व अवर्णनीय है। यह अमूल्य निधि विश्व मानव को विरासत के रूप में प्राप्त हुई है। अतः विरासत के रूप में प्राप्त इस धरोहर का संरक्षण एवं संवर्धन करना हमारा परम कर्तव्य है। गीता सभी उपनिषदों का सार है। गीता में केवल आध्यात्मिक ज्ञान का ही विवेचन नहीं है अपितु इनमें शिक्षा सम्बन्धी पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती है।

गीता में गुरु और शिष्य के बीच हुए संवाद इस बात के प्रमाण हैं कि गुरू एवं शिष्य के सम्बन्धों के विविध पक्षों की उत्कृष्टता शिष्य की समझ को किस प्रकार विकसित करती है और एक सकारात्मक सोच बनाते हुए निरन्तर व्यक्तिगत उन्नयन से वैश्विक उन्नयन तक जाती है।

उपनिषदों की साररूप श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित शैक्षिक मूल्य वर्तमान शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाने में सार्थक सिद्ध हो सकते हैं।

शोधकर्त्ता ने श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का चयन किया क्योंकि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इनके ज्ञान की अत्यधिक आवश्यकता है इनके ज्ञान से मानव कर्त्तव्यनिष्ठ बन सकता है। अपने स्व को पहचान सकता है। निष्काम कर्म की प्रेरणा ले सकता है और मोक्ष प्रदान करने वाले वास्तविक ज्ञान को पहचान सकता है। हमारे जीवन के लिये श्रीकृष्ण जैसे आदर्श गुरु के द्वारा दिया गया ज्ञान पथप्रदर्शक एवं मार्गदर्शक है। इनके ज्ञान से बालक अपनी समस्याओं का समाधान करते हुए जीवन जीने की कला सीख सकते हैं।

समस्या कथनः—

’श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता

अध्ययन विधि :—

प्रस्तुत शोध अध्ययन में श्रीमद्भगवद्गीता के संदर्भ में विद्वानों व विचारों द्वारा लिखित भाष्यों व टीकाओं, तथा साहित्यों के अध्ययन को आधार बनाकर मुख्य

रूप से दार्शनिक सर्वेक्षणयुक्त अध्ययन किया गया है जिसमें श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन किया गया है।

प्रमुख स्त्रोत :–

- श्रीमद्भगवद्गीता (महाभारत का संकलित अंश) गीता प्रेस गोरखपुर।
- आदि गुरू शंकराचार्य, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक व महात्मा गांधी के गीता भाष्य।
- गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद्भगवद्गीता से सम्बन्धित विभिन्न पुस्तकें।
- श्रीमद्भगवद्गीता से सम्बन्धित लेख व पत्रिकाएं इत्यादि।

शोध के उद्देश्य :–

1. श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक मूल्यों का गहन अध्ययन करना।
2. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का निम्नलिखित के संदर्भ में अध्ययन करना।

   (क) शिक्षा के उदेश्य

   (ख) निष्काम कर्म

   (ग) गुरू एवं शिष्य सम्बन्ध

   (घ) पाठ्यक्रम
3. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध से प्राप्त निष्कर्ष :–

श्रीमद्भगवद्गीता की विषय वस्तु का उद्देश्यों के अनुसार विश्लेषण करने पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य सम्बन्धी जो निष्कर्ष प्राप्त हुए वे इस प्रकार हैं–

1.

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्मुर्गा ते संगोषस्त्वकर्मणि।।

(श्रीमद्भगवद्गीता गीता 247)

मानव को फल की इच्छा किये बिना लगातार कर्म करते रहना चाहिए।

2. ज्ञान से ही मुक्ति सम्भव है अतः मनुष्य को ज्ञानी पुरूषों की संगति में रहकर ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

3. ज्ञानी पुरूष सुख–दुःख को समान मानकर उनकी परवाह नहीं करते।

4. जिसने ये जान लिया कि शरीर नाशवान है और आत्मा अविनाशी उसे मृत्यु का भय नहीं सताता।

'वासांसि जीर्णनि यथा विहाय नवानि ग्रावि नरोष्पराणि।

तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।। 22

आत्मा नित्य है।

5. निष्काम बुद्धि से भक्ति करनी चाहिए क्योंकि ईश्वर को शुद्ध चित्त से जो भी अपर्ण किया जाता है उसे स्वीकार्य होता है।

पत्र/पुष्पं फलं तोयं सो में भक्त्या प्रयच्छति।

तदहं भक्तयुतमश्नामि प्रयतात्मनः।। 9/26

6. सासारिक बंधनों से छूटने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान आवश्यक है क्योंकि ये ईश्वर से जोड़ता है।

7. मानव को अभिमान का त्याग कर देना चाहिए क्योंकि अभिमान से ईश्वर प्राप्ति असम्भव है ।

8. गीता में चित्त की शुद्धि पर विशेष बल दिया गया है अतः तन और मन दोनों को शुद्ध रखना चाहिए।

9. वाणी पर संयम रखना चाहिए क्योंकि व्यर्थ भाषण करना और बिना सोधे बोलना मूर्खता का लक्षण है।

10. ज्ञानी पुरूषों पर माया का आवरण नहीं रहता। इसलिए उनका अनुसरण करना चाहिए ।

11. समस्त जगत् की उत्पत्ति ईश्वर से हुई है और हम ईश्वर का अंश है।

12. जिस पर प्रभु की कृपा दृष्टि होती है उन्हें दिव्य ज्ञान की प्राप्ति होती है और उनकी अन्तःज्योति से अज्ञान का नाश हो जाता है।

13. जब तक हम स्वार्थ प्रवृत्ति का अन्त नहीं करेंगे तब तक हमें दिव्य ज्ञान नहीं मिल सकता।

14. ज्ञान भक्तियुक्त निष्काम कर्मयोग सब मार्गों में श्रेष्ठ है।

15. इन्द्रियों पर संयम आवश्यक है क्योंकि इन्द्रियों के वशीभूत होकर मानव अकृत्य कर्म भी कर्म बैठता है।

16. काम, क्रोध व लोभ का त्याग करके ही उत्तम गति पायी जा सकती है।

17. सांसारिक सुखों में पीछे दौड़ना व्यर्थ है क्योंकि ये क्षणिक होते हैं।

18. काम ही क्रोध का मूल कारण है, कामी पुरुष ईश्वर को अप्रिय है।

19. सात्विक गुणों का विकास ही शरीर का स्वस्थ विकास है।

20. ईश्वर की प्रत्येक वस्तु से प्रेम करना पर आसक्ति भाव किसी में न रखना।

21. निराभिमान पुरूष ईश्वर को प्रिय है।

22. कर्मफल के प्रति अनासक्ति भाव रखना चाहिए।

23. कर्म की सिद्धि के पांच कारण बताए है–

    1. अधिष्ठान 2. कर्ता 3. कारण 4. चेष्टा 5. देव

24. कर्म के तीन प्रेरक बताए है–

    1. ज्ञान 2. ज्ञेय और ज्ञाता 3. शाता

25. ज्ञान, कर्म, कर्ता, बुद्धि, धारण शक्ति और सुख के तीन प्रकार–

    1. सात्विक 2. राजस 3. तामस

इनमें सात्विक गुण को सर्वश्रेष्ठ माना।

26. श्रीमद्भगवद्गीता में सब कुछ ईश्वर के प्रति समर्पण का संदेश दिया है क्योंकि हमारा कुछ है ही नहीं ये मानव जन्म भी उसी से प्राप्त हुआ है।

27. श्रीमद्भगवदगीता में गुरू को उच्च्य स्थान दिया है क्योंकि गुरू ही मुक्ति का ज्ञान का मार्ग दिखाता है। गीता में कृष्ण को गुरु के रूप में प्रस्तुत करना इसका श्रेष्ठ उदाहरण है।

28. श्रीमद्भगवद्गीता का शिष्य अपने गुरू पर पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धा रखता है वह कहता है– शिष्यस्तेषहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।

29. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार एक श्रेष्ठ अथवा आदर्श गुरू में निम्न विशेषताएँ होती है।

गुरु की विशेषताएऐं

व्यक्तिगत विशेषताएँ	**व्यावसायिक विशेषताएँ**
• करूणा	• अद्वेषता
• निरहंकार	• मैत्रीपूर्ण व्यवहार
• संतोष	• क्षमा
• इंद्रिय नियंत्रण	• पक्षपात रहित व्यवहार
• आकांक्षाओं का अभाव	• विषय विशेषज्ञ
• शुद्व अंतःकरण	• आत्मविश्वास
• ममता एवं आसक्ति का अभाव	• बाल प्रकृति का ज्ञान
• दम्भाचरण का अभाव	• चिंतन मननशील
• मन एवं वाणी की सरलता	• स्वकार्य दक्ष
• एकान्तप्रियता	• निरन्तर अभ्यास करने वाला
• ज्ञानी	• बल रूचि का ज्ञाता

30. एक गुरु को निम्न कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

गुरू के कर्तव्य

व्यक्तिगत कर्तव्य	**व्यावसायिक कर्तव्य**
• सदाचार का पालन करना।	• शिष्य को अभिप्रेरित करना।
• सत्यभाषण करना।	• बाल प्रकृति के अनुसार।
• स्वधर्म के पालन के लिये कष्ट सहन करना।	• शिक्षा प्रदान करना।
• मन को वश में करना।	• शिष्य में आत्मविश्वास का भाव जागृत करना ।
• अतिथि की सेवा करना।	• शिष्य से प्रेमपूर्ण व्यवहार करना।
• शास्त्रविहित कर्म करना।	• शिष्य के हित की कामना करना।
• मनुष्योचित लौकिक व्यवहार करना।	• बाल–रूचि के अनुसार शिक्षा।

31. श्रीमद्भगवद्गीता के अनुसार एक शिष्य में निम्न विशेषताऐं होती है

शिष्य की विशेषताएँ

व्यक्तिगत विशेषताएँ	**व्यावसायिक विशेषताएँ**
• निरहंकार।	• गुरु के प्रति श्रद्धा।
• जितेन्द्रिय।	• विनयपूर्वक प्रश्न करना।
• साधन परायण।	• समर्पण।
• मन, वचन एवं कर्म की पवित्रता।	• ज्ञान प्राप्ति के लिये तत्परता।

• यथायोग्य आहार–विहार।	• अध्ययन, मनन एवं चिंतनशील।
• यथायोग्य सोना जागना और पूर्ण विश्वास।	• गुरु की ज्ञान क्षमता पर।
• कर्मों में यथायोग्य चेष्टा करना।	• निर्भयता।
• एकान्तप्रिय।	• ज्ञान प्राप्ति के लिये कष्ट सहन करना।

32. एक शिष्य को निम्न कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

शिष्य के कर्तव्य

व्यक्तिगत कर्तव्य	व्यावसायिक कर्तव्य
• सदाचरण करना।	• आचार्य कुल में आत्मीयता के साथ रहना।
• पवित्र आचरण करना।	• आलस्य न करना।
• यथार्थ भाषण करना।	• स्वाध्याय में प्रमाद नहीं करना।
• मन एवं इन्द्रियों पर नियंत्रण रखना।	• गुरु आज्ञा का पालन करना।

33. श्रीमद्भगवद्गीता के गुरु एवं शिष्य के बीच पिता–पुत्र के समान, मित्रतापूर्ण व आत्मीयतापूर्ण सम्बन्ध थे जो युगों–युगों तक शिक्षा एवं मानव समाज के लिये मार्गदर्शक बना रहेगा।

शैक्षिक निहितार्थ :–

व्यक्ति, परिवार, समाज व शिक्षा शास्त्रियों हेतु शोधकर्त्ता ने हमारे ग्रंथ रत्न के रूप में प्राप्त साहित्य श्रीमद्भगवद्गीता के शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन किया जिससे यह ज्ञात हुआ कि श्रीमद्भगवद्गीता में व्यक्ति के कर्तव्य, परिवार व समाज में

उसकी भूमिका तथा गुरू एवं शिष्य के सम्बन्ध में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध होती है। इसका उपयोग वर्तमान शिक्षा प्रणाली एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में किया जा सकता है।

प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्ष व्यक्ति, समाज तथा शिक्षक–प्राशिक्षकों, विद्यार्थियों, अध्यापकों, शिक्षा नीति निर्माताओं, शिक्षा शास्त्रियों के लिये उपयोगी, विभिन्न शिक्षा नियोजकों एवं शिक्षा नीति निर्माताओं के लिये जो की शिक्षा की आवश्यकताओं, शिक्षा के विकास एवं आदर्श नागरिकों का निर्माण करने वाले गुणवत्तायुक्त शिक्षकों के निर्माण के लिये उत्तरदायी है उनके लिये प्रस्तुत शोध सामग्री उपयोगी हो सकती है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब मानव भाव शून्य होता जा रहा है, कर्तव्य विमुख हो रहा है और भौतिकता की अंधीदौड़ में शामिल हो रहा है तब गीता के शैक्षिक व दार्शनिक मूल्य उसको आध्यात्मिकता से जोड़े रखने एवं सांसारिक आवागमन से मुक्ति दिलाने में सेतु का कार्य कर सकते हैं। श्रीमद्भगवद् गीता में निहित निष्काम कर्म की शिक्षा कर्त्तव्य विमुख लोगों को कर्त्तव्य पथ पर लाने में कारगार सिद्ध हो सकती है। यदि विश्व में शान्ति व सद्भावपूर्ण वातावरण निर्मित करना है तो गीता के आध्यात्मिक मूल्यों का अनुसरण करना होगा।

गीता के शैक्षिक मूल्य युगों–युगों तक व्यक्ति व समाज के लिए कल्याणाकारी व मार्गदर्शक बने रहेंगे।

शोध कार्य की सार्थकता व उपादेयता –

वेदों के सार रूप उपनिषद एवं उपनिषदों की साररूप श्रीमद्भगवद्गीता में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन वर्तमान शिक्षा प्रणाली को प्रभावी बनाने एवं मानव मात्र के कल्याण करने के लिये सार्थक सिद्ध हो सकता है श्रीमद्भगवद्गीता में उन महत्वपूर्ण शैक्षिक मूल्यों का समावेश है जो वर्तमान शिक्षा शिक्षक एवं शिक्षार्थी को उपयुक्त दिशा प्रदान कर सकते है।

इसकी सार्थकता व उपादेयता इस प्रकार है–

1. ज्ञानार्जन के क्षेत्र में

ज्ञानार्जन की प्रक्रिया तभी संभव है जब ज्ञान देने व ज्ञानार्जन करने वाले के बीच सम्बन्ध स्थापित हो अर्थात् प्रभावी संप्रेषण हो इस हेतु गुरु–शिष्य सम्बन्ध का मधुरतापूर्ण, मैत्रीपूर्ण होना नितान्त आवश्यक है। यदि बालक की रूचि ज्ञानार्जन में नहीं है और शिक्षक को बाल प्रकृति का ज्ञान नहीं है तो ऐसी स्थिति में ज्ञानार्जन की प्रक्रिया सम्भव नहीं है। ज्ञानार्जन तभी होगा जब शिष्य में जिज्ञासा की प्रवृत्ति हो एवं इस प्रकार की प्रवृत्ति गुरू शिष्य में उत्पन्न कर सकता है।

2. व्यावहारिक दृष्टि से

शिक्षा का कार्य मात्र उपदेश देना नहीं है, अपितु आचरण और व्यवहार का प्रशिक्षण देना भी रहा है। समाज में मान्य तरीके से बालक व्यवहार करे इस हेतु योग्य पथ प्रदर्शन का कार्य श्रीकृष्ण जैसे गुरू ही कर सकते हैं। अतः गुरु को केवल सैद्धान्तिक ज्ञान ही नहीं अपितु व्यावहारिक ज्ञान भी अपने शिष्य को प्रदान करना चाहिए।

3. अनुशासन की दृष्टि से

वर्तमान समय में बालक स्वंच्छन्द वादी हो गया है ऐसे में हम उपनिषदों एवं गीता की शिक्षा के आधार पर बालक में स्वानुशासन का विकास कर सकते हैं। बालक पर निर्णय थोंपने के बजाय यदि उसे निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्रदान की जाए तो स्वतः उसमें अनुशासन आ जाता है। गीता में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते है कि गुरु और शिष्य शिक्षा देने और लेने में अनुशासन का पालन करते थे। गुरु की दृष्टि शिष्य के आचरण पर रहती थी. वह उसे कुमार्ग से बचाने कुमार का प्रयास करता था। इस प्रकार गीता की शिक्षा के आधार पर बालक में स्वानुशासन का विकास किया जा सकता है।

4. गुरू शिष्य सम्बन्ध की दृष्टि से

वर्तमान में गुरू एवं शिष्य के बीच की खाई निरंतर बढ़ती जा रही है। गुरू एव शिष्य के बीच के सम्बन्ध औपचारिकतापूर्ण हो गए हैं। ऐसे में हम गीता के गुरू

शिष्य सम्बन्ध को दृष्टान्त के रूप में अन्यत्र दुर्लभ है। प्रस्तुत कर सकते हैं। गुरू शिष्य सम्बन्धों का ऐसा उदार व भव्य विवेचन

इस प्रकार का गुरु–शिष्य सम्बन्ध यदि स्थापित होगा तो हम शिक्षा को प्रभावी बना सकते हैं।

5. समाज में मूल्यों को स्थापित करने की दृष्टि से

वर्तमान शिक्षा एवं शिक्षक बालक में मूल्यों को स्थापित करने में असमर्थ दिखाई देते हैं। जबकि संस्कारयुक्त, मूल्यों से ओत–प्रोत जीवन का निर्माण करना ही इनका ध्येय होना चाहिये। गीता के गुरू विनय, श्रद्धा, समर्पण, त्याग, परोपकार, क्षमा, परस्पर सहयोग, सदाचार आदि मूल्यों का निर्माण करते हैं।

अतः गीता की गुरू शिष्य संकल्पना से वर्तमान शिक्षा में होने वाले मूल्यों के अवमूल्यन को रोकना सम्भव हो सकता है।

6. आधुनिक शिक्षा को प्रभावी बनाने की दृष्टि से

आधुनिक शिक्षा उद्देश्य केवल मात्र सूचना प्रदान करना मात्र रह गया है। यदि शिक्षा को प्रभावी बनाना है तो बालक को जीवनोपयोगी ज्ञान देना होगा। वर्तमान गुरू शिष्य सम्बन्ध । को मैत्रीपूर्ण एवं शिक्षा को मानव कल्याण करने वाली बनाना है तो प्रत्येक गुरू को कृष्ण जैसा प्रज्ञावान एवं शिष्य को अर्जुन के जैसा बनाना होगा। बालक को केवल सूचनाएं प्रदान करने के स्थान पर उसे आचरण एवं व्यवहार की शिक्षा प्रदान करनी होगी। गीता के शैक्षिक मूल्यों को उजागर करके तथा तत्कालिन गुरू व शिष्य को दृष्टान्त के रूप में प्रस्तुत करके वर्तमान शिक्षा को प्रभावी बनाया जा सकता है। तभी समाज में मानवीय मूल्यों की स्थापना हो सकती है एवं बालक के व्यक्तित्व का चहुंमुखी विकास किया जा सकता है।

7. शिष्य की दृष्टि से :–

वर्तमान समय में बालक में न तो गुरू के प्रति श्रद्धा का भाव है, न ज्ञान प्राप्ति के लिये तत्परता है और न ही उसका स्वयं की इन्द्रियों पर नियंत्रण है ऐसे में यदि यह सूत्र समझाया जाये कि– **श्रद्धावल्लिमते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रिय। 4/39**

अर्थात् श्रद्धावान बालक ही ज्ञान प्राप्त कर सकता है। ज्ञान प्राप्ति के लिये तत्परता आवश्यक है तथा मन व इन्द्रियों पर नियंत्रण आवश्यक है।

वर्तमान छात्र यदि ज्ञानार्जन के लिये इस सूत्र को अपना ले तो उनका पूर्ण विकास हो सकता है।

8. शिक्षक की दृष्टि से

वर्तमान शिक्षक बालकों के साथ पक्षपात पूर्ण व्यवहार करता है, उनकी रूचि का यान नहीं रखता उसे बाल प्रकृति का ज्ञान नहीं है जबकि वैदिक कालीन एवं महाभारतकालीन गुरू का एक मुख्य लक्षण अद्वेषता है।

गीता में श्रीकृष्ण कहते है कि –

क्लैक्यं मा रम गमः पार्थनैतत्वयुपद्यते।

तत्कालीन गुरू को बाल प्रकृति का पूर्ण ज्ञान था। कहा भी गया है कि 'सदृ शं चेष्टते स्वस्थाः प्रकुर्तेज्ञानवानपि।"

अर्थात् सभी प्राणी अपने स्वभाव के अनुसार कार्य करता है। इन सभी बातों को वर्तमान शिक्षक को अपनाना चाहिये। उसे कृष्ण के समान प्रज्ञावान होना चाहिये।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव :–

शोधकर्ता द्वारा शोध अध्ययन करने पर अन्य कई क्षेत्र सामने आते हैं एवं कई पक्षों पर प्रश्न उठते हैं जो स्वाभाविक हैं। श्रीमद्भगवद् गीता के दार्शनिक क्षेत्रों पर कई शोधकार्य हो चुके हैं लेकिन इसके शैक्षिक मूल्यों के अध्ययन की दृष्टि से शोधकट्टी का एक नवीन प्रयास है। इसमें और भी कई क्षेत्र एवं पक्ष ऐसे शेष है जिनमें अनुसंधान कार्य किया जा सकता है।

1. वैदिक कालीन शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन किया जा सकता है।
2. प्राचीन साहित्य में गुरू एवं शिष्य संकल्पना का अध्ययन किया जा सकता है।